

OUR PATRONS



DR (MRS.) SUKRITI RAIWANI DEPUTY COMMISSIONER KVS RO, DEHRADUN

MRS. SWATY AGARWAL
ASSISTANT COMMISSIONER
KVS RO, DEHRADUN

MR. LALIT MOHAN BISHT ASSISTANT COMMISSIONER KVS RO, DEHRADUN

MR SURJEET SINGH ASSISTANT COMMISSIONER KVS RO, DEHRADUN



MR. HANUMANT SINGH
PRINCIPAL

MESSAGE FROM THE CHAIRMAN



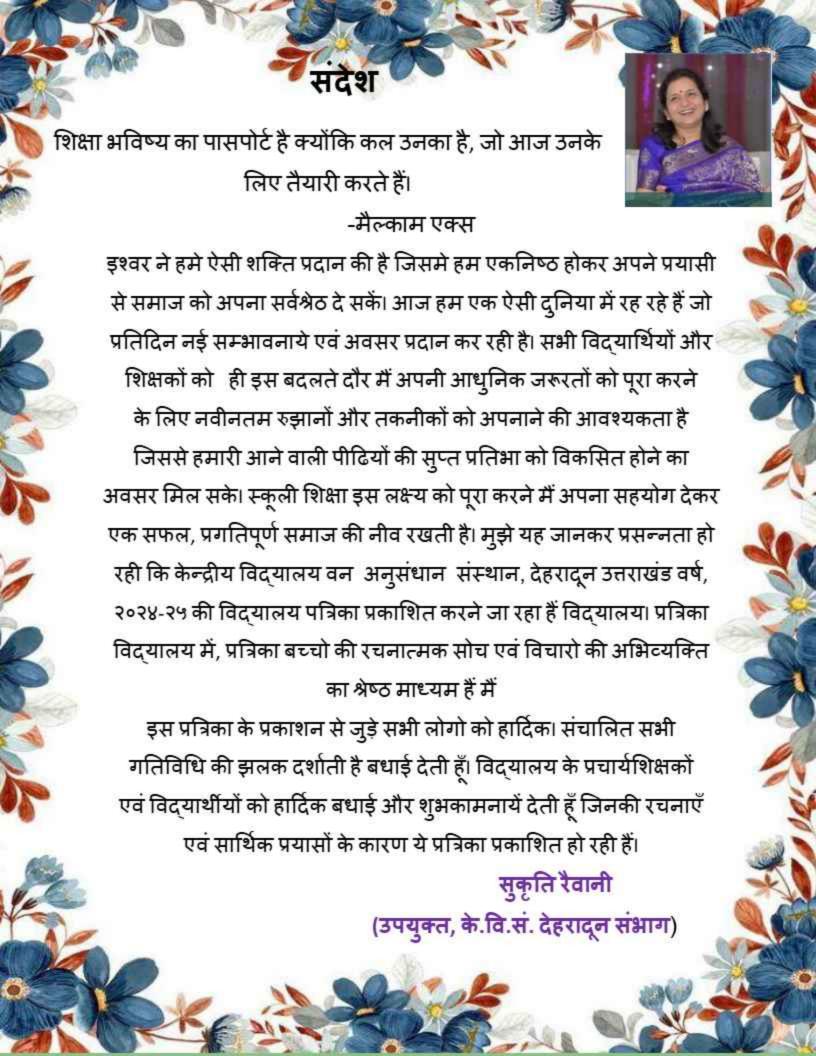
It gives me immense pleasure to convey my best wishes to Kendriya Vidyalaya FRI, Dehradun for its Annual Vidyalaya Patrika for the session 2024-25. The school magazine not only provides an opportunity to the students but also reflects the holistic development of the students through various activities.

The achievements of the students, is evidence of their progress.

With the commitment and dedication of their trained faculty, the school is sure to achieve the pinnacle of glory in its pursuit of grooming responsible citizens for the world.

My best wishes to the Principal, Staff, Parents and students and compliments to the editorial board for such a creative endeavor.

> DR. RENU SINGH DIRECTOR F.R.I THE CHAIRMAN, VMC



FROM THE PRINCIPAL'S DESK



A pivotal role of education lies in shaping the personality of a child
Into a healthy mind and happy soul and develop aptitude required for
Academic excellence to help her/him face the challenges of life in a balanced and
harmonious way. We at Kendriya Vidyalaya KV FRI, have continuously been working
towards the holistic development of our learners by providing them the
opportunities

And experiences that encourage them to think. The aim is to create Empowered minds so that the learners are able to differentiate Between right and wrong and avail opportunities that help build their personality and enable them to live in harmony and spread peace and love.

We are proudly preparing the future leaders of the world.

Each issue of our school magazine is a milestone that marks our growth, unfolds our imaginations, and gives life to our thoughts and aspirations.

It unleashes a wide spectrum of creative skills ranging from writing to editing and even designing the magazine. I congratulate the entire editorial team for their hard work and dedication in making this dream come true.

Sh. Hanumant Singh Principal KV FRI Dehradun

OUR EDITORS



MRS. TARA JOSHI PGT HINDI



MRS. PRATIBHA RAWAT
PGT ENGLISH



MRS. ANAMIKA TGT SANSKRIT



MRS. VEENA SHARMA
TGT (AE)



MRS. KIRAN BALA TIRWA

(PRT)



MRS.NEETU SHARMA

TGT HINDI



MS.TANIMA THAPA

COMPUTER INSTRUCTOR

संपादक की कलम से

प्रिय विद्यार्थियों, शिक्षकों और पाठकों,

विद्यालय पत्रिका के इस नए संस्करण में आप सभी का स्वागत है। यह पत्रिका केवल शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि हमारे विद्यालय की सृजनात्मकता, उपलब्धियों और विचारों का दर्पण है।



शिक्षा का अर्थ केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्तित्व निर्माण, नवाचार और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का साधन भी है। आज का युग ज्ञान और तकनीक का है, जहाँ नई संभावनाएँ हमें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं।

इस पत्रिका में विद्यार्थियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति को स्थान दिया गया है-कविताएँ, लेख, चित्रकला और प्रेरणादायक कहानियाँ। ये न केवल उनकी सोच को दर्शाती हैं, बल्कि हमें भी नई दृष्टि प्रदान करती हैं।

हमारा विद्यालय सदैव विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर, नैतिक और जागरूक नागरिक बनाने के लिए प्रयासरत है। इस यात्रा में शिक्षकों और अभिभावकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो बच्चों को प्रोत्साहित कर उनके भीतर छिपी प्रतिभा को निखारते हैं।

आशा है कि यह पत्रिका आपके मन को प्रसन्न करेगी और आपको प्रेरित करेगी। आप सभी के सहयोग और रचनात्मक योगदान के लिए हार्दिक आभार।

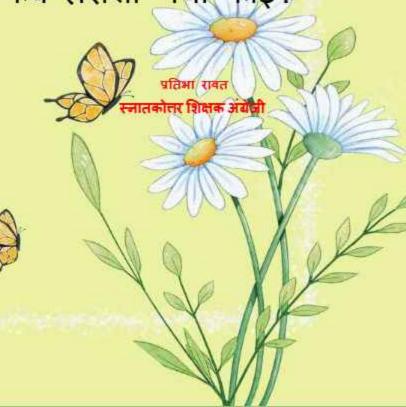
> शुभकामनाओं सहित, तारा जोशी स्नातकोत्तर शिक्षक



संपादक की कलम से

अच्छा साहित्य, अच्छा संगीत, अच्छी संगति, दवा है कुछ जख्मों और नम पलकों की। बोझ इच्छाओं का झुकाए, जब बेइंतहा, ढूंढिए, कोई जादू, कुछ पन्ने, कुछ नगमे, कुछ तजुर्बा। देगा ताकत खड़े रहने की, अडिग उस राह पर, जिस पर मुड़ना, रुकना है, कायराना। झुक जाए हालात के आगे,वो शीश क्या? जले, घिसे बिना सोना कब तराशा गया कोई?







पत्र -पत्रिका कस्यचित् अपि लेखकस्य व्यक्तित्वस्य प्रतिबिम्बः भवित | यत्र तस्य व्यक्तित्वं द्रष्टुं शक्यते | संस्कृत साहित्ये ज्ञान - विज्ञानयोः निधिः वर्तते | संस्कृत भाषा सर्व भाषाणां जननी कथ्यते | संस्कृत भाषा सर्वभूतेषु आत्मवत् व्यवहारं कर्तुं शिक्षयित | अस्मिन् विद्यालय- पत्रिकायां अस्माकं विद्यालयस्य छात्रैः संस्कृत भाषायां लघु - लघु लेखैः स्व विचारान् प्रस्तुतवन्तः | तेषां प्रयासः सराहनीयः वर्तते | ते स्व बालसुलभ विचारान् स्व लेखन्या अस्मिन् पत्रिकायां प्रस्तुतवन्तः |एते लेखाः पूर्णरूपेण छात्रैः लिखिताः सन्ति एतत् कारणात् त्रुटिः अपि भवितुं शक्यते परं तेषां उत्साह -वर्धनम् आवश्यकं वर्तते | अस्माकम् छात्राः मानवीय मूल्यानां प्रति आस्थावान् भवेयुः साहियानुरागी भवेयुः इति मम कामना अस्ति |

अस्माकम् विद्यालयस्य प्राचार्य महोदयस्य मार्गदर्शनेन , उत्साहवर्धनेन च इयं विद्यालयपत्रिका भवतां समक्षं प्रस्तुतम् अस्ति ।

शुभकामनाः सहितम्

अनामिका

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका



वक्त कम मिलता है!

डगमगाते कदमों को लड़खड़ाकर के चलने का गिरने से पहले मां की गोद में संभलने का अब वक्त कम मिलता है! आंसुओं को बिना बात के यूं ही मिरने का गिर से पहले मां का उन आंसुओं को पाँछ लेने का अब वक्त कम मिलता है! वो बारिश की बूंदें वो ठंडी हवाएं वो ठिठुरना बारिश में भीग जाने का फिर अपनों से डांट खाने का अब वक्त कम मिलता है! स्कूल की पगडंडियों में दोस्तों के साथ चलने का स्कूल में गिनती पहाड़े चिलाकर याद करने का अब वक्त कम मिलता है! वो बातें जो खत्म नहीं हुआ करती थी वो लम्हें खुशियों के जो यूं ही बीत जाया करते थे इन लम्हों को जीने का दोस्तों से मिलने का

हैं कहीं दूर मगर यादों में अपना घर जंगल है करता है मन हर पल घर आने का लेकिन.. अब वक्त कम मिलता है!

अब वक्त कम मिलता है!



FROM THE EDITOR'S PEN

A MAGICALLY MYSTIC LAND CALLED "KAZA"

Kaze, nestied in the Spiti Valley's embrace,
Where the mountains kiss the sky with grace.
A place where time seems to passe,
in the stillness of mazure, without a cause.

Amidst the sugged, untouched land, A monastery stands, silent and grand. Kaza, a realm of tranquility and charm Where peace resides, far from harm.

In April, I embarked on a journey so, pur To Kaza, where mountains allure. The road itself, a scenic delight, With Spiti River shining to the light.

A kozy homestay, warm and kind, Welroming me with peace of mind. The adventure began, as I wanted, I would be where history had grown

Key Monastery, majestic and grand, Asia's highest bridge, a wonder to stand. The world's highest post office, a marvel so true, And to Komic, Lanza, where the sky was blue.

Niti Valley's beauty, like a dream untold, Eabo and Dhankar, stories of old. Monasteries that whispered a thousand years, Telling tales of faith, of joy and tears.

A journey through time, through pature's heart, Where every corner was a work of art.

> Tanima Thapa Computer Instructor

असम डायरी

गुवाहाटी' अपॉइंटमेंट लेटर में जब यह नाम पढ़ा तो दो रात तक नींद ही नहीं आई और मंगलदोई' का तो नाम भी नहीं सुना था |'असम' का नाम लेते ही जहन में आता उल्फा उग्रवादियों की उन घटनाओं का, जिसने दशकों से असम की शांति को भंग किया हुआ था |खैर ज्वाइन तो करना ही था | संयोग से बड़े भैया के एक जानकार मिले जो मंगलदोई के पास ही शिपाझार कसबे के रहने वाले थे | साँस में साँस आई कि चलो कोई तो मिला अपनी जान पहचान वाला जो इतनी दूर अनजान शहर में सहारा बन सके।



तो शुरू हुआ असम प्रवास का वह सफर जो लगभग साढ़े चार साल तक चला लेकिन उसकी खूबसूरत यादें दिल को अलग ही खुशी और रोमांच से भर देती है |प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर, चाय के सीढ़ीदार बागानों से हरित, ब्रहमपुत्र की विशाल जलधारा से सिंचित असम के खूबसूरती आँखों से जैसे दिल में भी सदा के लिए बस गई है | माँ कामाख्या का आशीर्वाद जैसे यहाँ की भूमि को पवित्रता की भूमि बना देता है | हालांकि कोरोना महामारी के कारण बहुत ज्यादा असम देखने का मौका तो नहीं मिला लेकिन जो भी देखा वह अविस्मरणीय है | हमारा विद्यालय जिस शहर में था 'मंगलदोई' ,वह था तो छोटा -सा, लेकिन आधुनिक सुख -सुविधाओं की दृष्टि से पीछे नहीं था |

दरंग जिले के मुख्यालय के रूप में प्रसिद्ध यह शहर इसी जाम की नहीं के किनार यस हुआ है जिसके किनार साल मर तरह-तरह के धार्मिक और सारकालिक अध्योजन होते रहते हैं |मगजदोई करका गुलमोहर और शिरीण के विशाल पेड़ों से अच्छादित रहता है | मौसम आने पर लाल-लाल फूलों से सड़कों के किनारे खंड़ ये पह उच्चावन रिजित हो जाते तो उनसे नजर हटाए नहीं हटती थी | थोड़ी-थोड़ी दूर पर बने तालाब मंगलदोई के सौंदर्य को और भी बढ़ा देते थे | इन तालानों के किनार अक्सर दिखने वाले नीलकंठ को देखकर ना जाने कितनी मनौतियाँ मन में इश्वर से मांगी थी | कहते हैं किसों भी देश नगर, गाँव का चरित्र वहां रहने वाले लोगों के चरित्र से बनता है | यहाँ के लोगों की अलमनसाहत ,उदारता और जीवंतता का कोई सानी नहीं | भाषा के बंधन भी अपनी भावनाओं के आधार प्रदान में कभी कोई बाधा उत्पन्न नहीं कर सके |सबसे अच्छी बात मुझे असम के लोगों की यह लगी कि वे अपनी संस्कृति से गहरा जुड़ाव रखते हैं |चाहे छोटा हो या बड़ा अपने हर त्योंहार को पूरे मनोयोग और उत्साह से मनाते हैं जैसे यही उनका ध्येय हो | इसमें हर पीढ़ी के लोग पर बढ़ चढ़कर भागीदारिता करते हैं | साल में तीन बार मनाया जाने वाला बिहू हो, सरस्वती पूजा हो या दुर्गा पूजा जैसे त्योहार, असम का हर व्यक्त इन त्योहारों के विविध रंगों में डूब जाता है | विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े महान व्यक्तियों की जयंतियाँ मनाना भी ये नहीं भूलते | इं. भूपेन हजारिका की जयंती पर भव्य आयोजन किये जाते हैं |

एक छोटा सा वाक्य याद आता है जब असम की एक टीचर से मैंने कहा कि मैम यदि आपको दिल्ली रहने का मौका मिले तो कितना अच्छा होगा तो उन्होंने तपाक से कहा क्यों, असम में क्या नहीं है जो हम दिल्ली जाएंगे ? हमारे लिए तो हमारा आसाम ही सबसे अच्छा है " |जहाँ हर कोई व्यक्ति अच्छे विकल्प की तलाश में बाहर जाने की इच्छा रखता है, यह जवाब सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ और अच्छा भी लगा।

यह केवल उन्हीं मैडम की बात नहीं वहाँ के लगभग सभी लोग अपनी मातृभूमि से इतना प्रेम करते हैं कि वहाँ की हरीतिमा को छोड़कर कहीं अन्य जाना ही नहीं चाहते चाहे हर साल बाढ जैसी विभीषिकाजीवन को अस्त व्यस्त कर देती हो विनाशकारी बाढ़ को भी अपने जीवन का कैसे हिस्सा बनाया जाए यह वहाँ के लोगों से ही सीखा जा सकता है जब वह बड़े- बड़े जाल लेकर मछली पकड़ने उमहती नदियों के समीप बैठ जाया करते हैं | नृत्य, संगीत, कला , मृंगा रेशम से बनी मेखला चादर (साड़ी), असम चाय और अन्य जीव जंतुओं के लिए प्रसिद्ध असम को भूल पाना असंभव है कम से कम मेरे लिए तो नहीं | काश एक बार फिर वहाँ जाऊं और महती ब्रहमपुत्र को नमन करें !

Education extends far beyond textbooks and classrooms. While academic excellence is crucial, a student's true potential is nurtured through co-curricular activities. From sports and debates to music, drama, and art, these activities are the heartbeat of a vibrant school life.

Co-curricular activities are not just an escape from

Routine studies but an essential component of holistic

Development. They teach teamwork, leadership, discipline,

And time management—skills that remain valuable throughout life.

Participation in these activities helps students discover their strengths and passions, fostering creativity and self-confidence.

In today's competitive world, well-rounded individuals stand

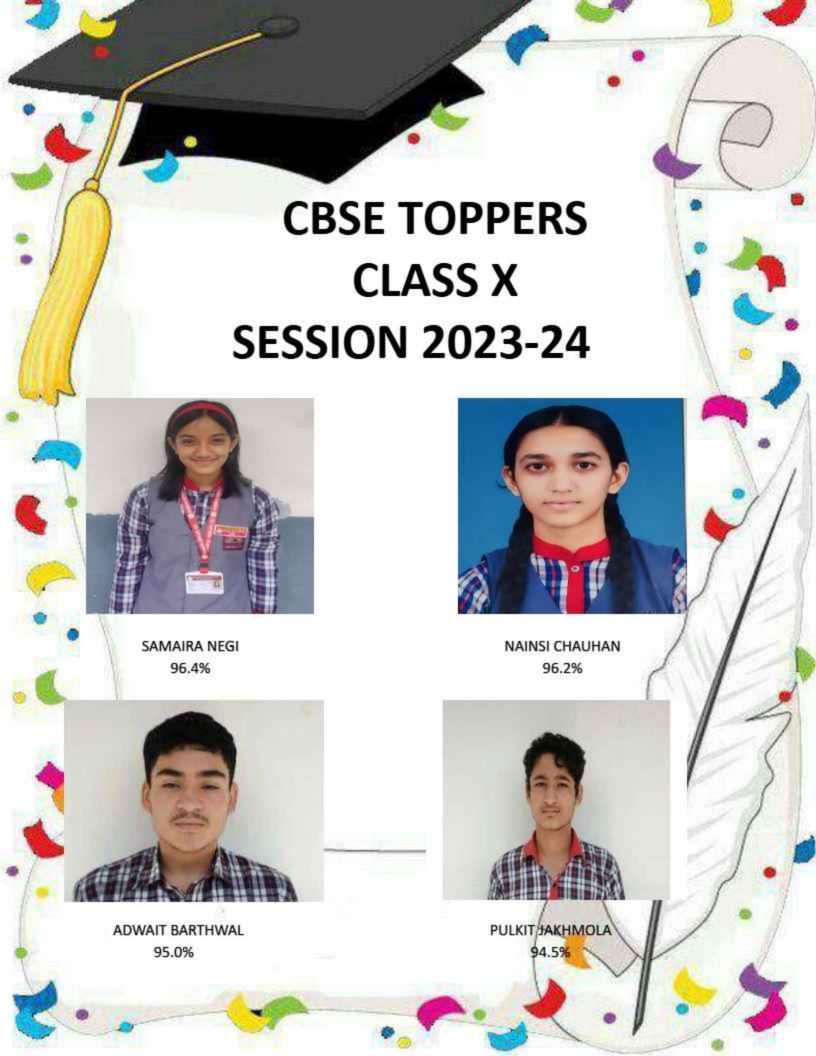
Out. A student who balances academics with co-curricular achievements is better prepared for future challenges. These activities also instill a sense of responsibility, resilience, and adaptability—qualities that no textbook can teach.

At K.V F.R.I we take pride in encouraging our students to explore beyond the classroom. Our annual events, competitions, and clubs provide a platform to showcase talent and grow as individuals. This edition of our school magazine celebrates the achievements of our students in various co-curricular fields, highlighting their dedication and enthusiasm.

We hope this inspires every student to step forward, participate, and embrace the opportunities that co-curricular activities offer. After all, education is not just about marks; it is about experiences that shape character and future success.

Kiran Tirwa
CCA I/C primary





पाठ्य सहगामी क्रियाकलाप 2024 - 25

पाठ्य सहगामी क्रियाएं छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उनके द्वारा छात्रों के भीतर छिपी प्रतिभा को उभारने का सुअवसर प्राप्त होता है। सत्र का शुभारंभ अंतर सदनीय दोहा पाठ प्रतियोगिता द्वारा किया गया। अप्रैल माह के द्वितीय सप्ताह में भाईचारे व समानता की भावना को विकसित करने के उद्देश्य से 'हरित- दिवस' का आयोजन किया गया। इसमें छात्रों ने स्वैच्छिक रूप से पुस्तकों का आदान -प्रदान किया। इसके साथ ही अंतर सदनीय प्रदर्शन पट्ट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका विषय था 'एक भारत श्रेष्ठ भारत'

मई माह में छात्र-छात्राओं के लिए ग्रीटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जून माह में अंतर सदनीय एकल गायन प्रतियोगिता में छात्र-छात्राओं ने अपनी गायन प्रतिभा से सुरों का ऐसा समां बांधा जिसने सबको मंत्र मुग्ध कर दिया।

जुलाई माह के प्रारंभ में 'अग्नि रहित पाक कला' प्रतियोगिता के द्वारा विद्यार्थियों ने बिना अग्नि का प्रयोग किए भांति -भांति के सुस्वादु व्यंजन तैयार कर अपनी पाक कला का लोहा मनवाया। तत्पश्चात अंतरसदनीय प्रदर्शन पट्ट सज्जा प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें संस्कृत,गणित,विज्ञान सामाजिक विषय तथा केंद्र सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के विषय में विस्तृत जानकारी सम्मिलित थी।

अगस्त माह में उत्तरदायित्व बोध व नेतृत्व क्षमता का विकास करने हेतु 'छात्र परिषद अलंकरण समारोह' का आयोजन किया गया । अगस्त माह के तीसरे सप्ताह में विद्यार्थियों की भाषा क्षमता व तार्किक क्षमता के संवर्धन हेतु 'आंग्ल भाषा आशु भाषण प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया । इसके साथ ही विद्यालय में संस्कृत सप्ताह का सफल आयोजन किया गया । इसमें संस्कृत विषय पर आधारित अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए । सितंबर माह का शुभारंभ हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत हिंदी काव्य पाठ व संस्कृत श्लोक पाठ प्रतियोगिता से हुआ । इसमें छात्रों ने बढ़- चढ़कर प्रतिभाग किया ।

शिक्षक दिवस पर आयोजित रंगारंग कार्यक्रम में छात्रों का उत्साह देखते ही बनता था। दिनांक 1.9.2024 से 14.9.2024 तक विद्यालय में स्वच्छता पखवाड़े का आयोजन किया गया,जिसके अंतर्गत निबंध,चित्रकला व स्वच्छता पर आधारित प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया।

दिनांक 1.9.2024 से 14.9. 2024 तक हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत श्रुतलेख, सुलेख, निबंध, एकांकी व वाद- विवाद प्रतियोगिता के आयोजन में छात्रों व कार्यालय कर्मियों ने भी बढ़ चढ़कर प्रतिभाग किया । दिनांक 30.10.2024 से 4.11.2024 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह में आख्यान,प्रश्नोत्तरी व भाषण प्रतियोगिता के द्वारा समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार के प्रति सभी को जागरूक करने का प्रयास किया गया। दिनांक 10 नवंबर को शिक्षा दिवस पर अनेक प्रतियोगिताएं आयोजित की गई, जिसमें सेमिनार के द्वारा मानव जीवन में शिक्षा का महत्व दर्शाया गया । बाल दिवस पर विद्यालय में सामूहिक भोज के आयोजन में सभी छात्रों ने मिलजुल कर एक दूसरे के स्वादिष्ट भोजन का आनंद लिया ।इस अवसर पर फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता, समूह व एकल गीत कार्यक्रम का आयोजन किया गया । शिक्षक शिक्षिकाओं ने भी इस अवसर पर अपनी प्रस्तुतियां दीं । जनजातीय गौरव सप्ताह के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, साथ ही विद्यार्थियों को अंबेडकर मैदान में आयोजित अखिल भारतीय जनजातीय महोत्सव एवं प्रदर्शनी का श्रमण भी करवाया गया। इस दौरान छात्रों ने जनजातीय संस्कृति, परंपराओं और उनकी जीवनशैली से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त कीं। इस प्रकार के शैक्षिक भ्रमण से विद्यार्थियों को देश की विविधता को नजदीक से समझने और जनजातीय समाज के योगदान के प्रति जागरूक होने का अवसर मिला। 27 नवंबर को विद्यार्थियों को बाल अधिकारों के प्रति जागरूक करने हेत् 'पोक्सो' कार्यशाला आयोजित कर विद्यार्थियों को उनके अधिकारों से रूबरू कराया गया। अंतरराष्ट्रीय हिंदी ओलंपियाड में विद्यालय के 51 छात्रों ने प्रतिभाग किया जिनमें से आठ विद्यार्थियों ने स्वर्ण व रजत पदक प्राप्त किए । 23 दिसंबर को लोक संस्कृति दिवस के अंतर्गत विद्यार्थियों ने गढ़वाली व जौनसारी व नेपाली कार्यक्रम की सुंदर प्रस्तुतियां देकर मातृभाषा के प्रति अपने प्रेम को दर्शाया । संस्कृति ज्ञान परीक्षा में विद्यालय के 300 बच्चों में प्रतिभाग किया जिनमें से दो बच्चों ने जिला स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया एवं दो ने तहसील स्तर पर प्रथम व तृतीय स्थान प्राप्त किया।







मेरा मन चाहता है कि मै

मेरा मन चाहता है कि मैं
हर परीक्षा में अन्वल हो जाऊं
मेरा मन चाहता है कि मैं
टावर जितनी लंबी हो जाऊं
मेरा मन चाहता है कि मैं
इस दुनिया में बस चलाऊँ
मेरा मन चाहता है कि मैं
बड़े होकर जग में नाम कमाऊँ

मेरा मन चाहता है कि मैं

मैं पूरे देश का चक्कर लगाऊँ

मेरा मन चाहता है कि मैं

अंतरिक्ष में सैर लगाऊँ

मेरा मन चाहता है कि मैं
राष्ट्रपति अवार्ड से सम्मानित हो जाऊँ
मेरा मन चाहता है कि मैं
लोगो की मदद करते जाऊँ

दिव्यांशी जोशी आठवी 'अ'

बाल मजद्री

बाल मजदूरी एक सामाजिक अपराध हैं। इससे समाज संकीर्ण भावों के प्रति उजागर होता हैं। छोटी उम के बच्चें से जिनकी वर्तमान उम इतनी छोटी हैं कि उनसे विभिन कार्यों का प्रतिनिद्त्व करवाना एक जुर्म हैं, उसे बाल मजदूरी कहा जाता हैं। बच्चों की जिस समय पढ़ने-लिखने, खेल-कूदने की उम हैं अगर उनसे इस उम में व्यापारिक एवं सामाजिक काम करवाया जाए तो इसका अर्थ हैं कि उनके मौलिक अधिकार उनसे छीने जा रहे हैं। किसी भी व्यक्ति की निजी राय एवं उनके निण्यें उसके जीवन में एक अहम भूमिका निभाते हैं। इसलिए उनके अधिकारों के विरुद्ध जाना किसी भी अन्य व्यक्ति का अधिकार नहीं हैं। 14 वर्ष की उम से पहले अगर कोई भी बाल किसी भी प्रकार के कार्य में सम्मिलित हो जो कि उनके दिनचर्या अवं आय से सम्बंधित है तो इसका अर्थ है कि हम बाल मजदूरी जैसा अपराध-युक्त प्रथा में एक अहम भूमिका निभा रहा हैं। हमें बच्चों के काम पर जाने की दिशा पर कोई सवाल खड़े कर सकते हैं जैसे :

- 1. शिक्षा और विकास का संकट,
- 2. सामाजिक और मानसिक प्रभाव
- 3. शारीरिक और स्वास्थ्य सम्बंधित समस्यायें,
- 4. आर्थिक और सामाजिक आसमानता,
- 5. कानूनी और नैतिक हिस्टिकीणा

हमें उन बच्चों के बारे में सोचना चाहिए जो हमारे जैसा जीवन बिताना चाहते हैं, वह सोचते होंगे की काश उसके भी माता-पिता उसे हमारे माता-पिता की तरह स्कूल छोड़ा रंग-बिरंगी किताबे छुकर देखे, एक आम जीवन हासिल करे, ना कि काम पर जाए उस उम में जिस उम में उन्हें स्कूल जाना चाहिए।

> वैभवी शाही नवी 'अ'

उन वीरों को मेरा प्रणाम

उन वीरों को प्रणाम, जिन्होंने देश का रखा मान, नहीं घटने दिया इसका अभियान। उन वीरों को मेरा सलाम, उन वीरों को मेरा प्रणाम। आओ हम करें मिलकर उन वीरों का ग्णगान, जिन्होंने दिया देश की रक्षा के लिए बलिदान। नहीं लुटने दी इसकी आन, बान और शान, उन वीरों को मेरा प्रणाम। जिन्होंने बचाई हमारी जान, देकर स्वयं का बलिदान। आओ हम मिलकर करें, उन वीरों का गुणगान, उन वीरों को मेरा प्रणाम। सदा रहते तत्पर सीमा पर, करने देश की रक्षा उन वीरों को मेरा प्रणाम। उन वीरों को मेरा प्रणाम।

> तान्या ठाकुर छठी 'ब'

PRE-VOCATIONAL EDUCATION



भारतीय संविधान

भारतीय संविधान न केवल भारत की कानूनी संरचना का आधार है, बल्कि यह भारतीय समाज और संस्कृति की विविधता और बहुलता को भी सम्मानित करता है। इसमें भारतीय लोकतंत्र के सभी पहलुओं को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया है, जिसमें जन प्रतिनिधित्व, नागरिक अधिकार, और सरकारी कार्यों की पारदर्शिता शामिल हैं। संविधान ने भारतीय नागरिकों को न केवल व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सुरक्षा दी है, बल्कि यह समान अवसर, सामाजिक न्याय, और विकास के लिए भी मार्गदर्शन प्रदान करता है।

संविधान में दिए गए "मौलिक कर्तव्यों" नागरिकों के दायित्वों को भी रेखांकित करते हैं, जो यह सुनिश्चित करते हैं कि संविधान केवल अधिकारों का नहीं, बल्कि जिम्मेदारियों का भी पालन करता है। भारतीय संविधान का प्रींबल, जो "हम भारत के लोग" से शुरू होता है, यह दर्शाता है कि संविधान को जन-प्रतिनिधित्व और सार्वजनिक विचारों के आधार पर बनाया गया है और यह देश की आत्मा और धारा को जीवित रखता है।

संविधान में विशेष रूप से "धर्मनिरपेक्षता" की धारणा को प्राथमिकता दी गई है, जिससे भारत में विभिन्न धर्मों, जातियों, भाषाओं और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों के लोगों को समान अधिकार प्राप्त होते हैं। इसने भारतीय समाज को एकता और अखंडता की दिशा में एक मजबूत आधार प्रदान किया है, और यह सुनिश्चित किया है कि भारत में सभी नागरिकों को उनके धर्म, जाति, लिंग या भाषा के आधार पर भेदभाव का सामना न करना पड़े। संविधान में प्रदत्त "संविधानिक प्राधिकरण" ने न्यायपालिका को स्वतंत्र रूप से कार्य करने की स्वतंत्रता दी है, जिससे न्यायपालिका अपने निर्णयों में निष्पक्ष और स्वतंत्र रूप से काम कर सकती है। यह प्रणाली नागरिकों को न्याय की समानता और त्वरित उपलब्धता सुनिश्चित करती है। संविधान में संशोधन की प्रक्रिया भी दी गई है, जिससे इसे समय के साथ बदलती सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थितियों के अनुसार ढाला जा सकता है।समग्र रूप से, भारतीय संविधान ने न केवल एक कानून व्यवस्था की स्थापना की, बल्कि यह एक दिन्दिकोण और जीवन के सिद्धांतों का मार्गदर्शन भी करता है, जो भारतीय समाज को विविधताओं के बावजूद एकजुट रखने में सहायक है। यह हमारे राष्ट्र की पहचान और आत्मिनिर्भरता का प्रतीक है, और देश की प्रगति में हर नागरिक की सहभागिता सुनिश्चित करता है।

प्रकृति

एक सुन्दर सी घाटी थी, जहाँ हरियाली छाई हुई थी। पेड़-पौधे हरे-भरे थे, और रंग-बिरंगी फूल खिले हुए थे। पहाड़ों की चोटियाँ आसमान को छूती हुई लगती थी। एक छोटी सी नदी भी थी, जो धीरे-धीरे बहती थी।

एक दिन, एक छोटा सा लड़का घाटी में घूमने गया। वह प्रकृति की खुबसूरत से बहुत प्रभावित हुआ। उसनपेड़ों को देखा, फूलों को सूँघा, और नदी में पानी खेला। उसे बहुत मज़ा आ था।

अचानक, उसने एक चिड़िया को देख, जो एक डाल पर बैठी थी। चिड़िया मीठा गाना गा रही थी। लड़का चुपचाप सुनने लगा। गाना इतना सुंदर था कि उसे शांति मिल रही थी।

लड़के ने सोचा कि प्रकृति कितनी खुबसूरत है। हमें इसकी रक्षा करनी चाहिए। हमें पेड़-पौधे काटकर और नदियों को गंदा करके प्रकृति को नुकसान पंहुचा रहे हैं। हमें इसे रोकना होगा।

उस दिन के बाद, लड़का प्रकृति की रक्षा करने का संकल्प लेता है। वह अपने दोस्तों को भी प्रकृति के महत्व के बारे में बताता है। वे सब मिलकर प्रकृति को बचाने का प्रयास करते हैं।

खेल का मैदान

मेरा नाम खेल का मैदान है। मैं केंद्रीय विद्यालय वन अनुसंधान संस्थान,देहरादून में रहता हूँ। मुझे हमेशा हरे-भरे रंग के कपड़े पहनना पसंद है। मेरे चारों ओर लम्बे-लम्बे, घने पेड़ों की चारदीवारी है। मेरे सबसे अच्छे मित्र यहाँ की बेंच, यहाँ लगे हुए पेड़, खेलों के जाल,फूल और तितिलयाँ हैं। एक डरावना दोस्त भी है मेरा-यहाँ का रात का अँधेरा।।हाँ,एक और दोस्त है मेरा जो बहुत दूर रहता है- ऊपर ऊँचा आसमान। मेरी एक बहन भी है-स्कूल की बिल्डिंग। मेरा सबसे बड़ा शत्रु डस्टबिन है जिससे बच्चों के बीमार होने का ख़तरा रहता है।बंदर समय-बेसमय इसमें ताक-झाँक करते रहते हैं।

समय-समय पर मेरी हजामत हो जाती है जब मेरी बड़ी-बड़ी घास को मशीन से काटकर छोटा किया जाता है। मुझे शांत रहना पसंद नहीं है; मुझे चहल-पहल और कोलाहल बहुत अच्छा लगता है। जब बच्चे मुझ पर खेलते हैं तब मुझे गुदगुदी होती है। कभी-कभी तो बाहर से मेहमान भी खेलने के लिए आते हैं। लेकिन जब मेरा मुँह यानि मेरा गेट बंद कर दिया जाता है और बच्चों का आना रुक जाता है, तब मैं उदास हो जाता हूँ और अकेलापन महसूस करता हूँ।कभी-कभी तेंदुए के डर से भी मेरा गेट बंद कर दिया जाता है,इसलिए मुझे तेंदुआ भी अपना दुश्मन लगता है।

जब यहाँ पर प्रतियोगिताएँ होती हैं और अलग-अलग विद्यालयों से टीमें आती हैं और खेलती हैं, तब मुझे त्यौहार जैसा महसूस होता है और मैं कई दिनों तक आनंदित रहता हूँ।मेरी राम-कहानी कुछ अधिक ही लंबी हो गई।

अब मैं अपनी कथा समाप्त करता हूँ। सभी को मेरा राम-राम!

प्रिंस बड़ोला नवीं-अ

INTERNATIONAL DAY OF YOGA



VIDYAPRAVESH











<u>"साहसी बालक"</u>

एक समय की बात है। लाम्ही गांव में एक पूर्णचंद नाम का बालक अपने मातापिता के साथ रहता था। घर की आर्थिक स्थिति देखते हुए वो कठिन परिश्रम करता तथा पढाई करने के लिए प्रतिदिन विद्यालय जाया करता था। उस दिन उसके घर मेहमान रात ठहरने को आये थे जिस कारण वह अपने पिता के साथ आंगन में चारपाई पर सो गया। वह गाँव की बस्ती में शोर सुनकर जाग उठा और इधर- उधर भागने लगा।

वह उठकर यह देखता है कि गाँव की सूखी झोपड़ियाँ आग की गोद में समा गयी। आग तेजी से पूर्णचंद की पाठशाला तक पहुंची। पूर्णचंद पाठशाला के प्रति अपना प्यार व्यक्त करते हुए पाठशाला की ओर भागा परंतु वहां उसे ताला मिला। पास की आम की लकड़ी जलती हुई बाँस तथा फूस से बनी पाठशाला की छत पर गिर गई। पूर्णचंद जल्दी से अपनी बुद्धी का उपयोग करते हैं, पास में रखे बड़े डंडे से छत पर पानी डालने लगा। पूर्णचंद की बहाद्री देखते हुए गाँव वासियों ने उसकी सहायता की।

सभी गाँववासियों ने प्रधान से पूर्णचंद की बहादूरी के लिए सम्मान देने के लिए अपील करी। फिर पूर्णचंद को गणतंत्र दिवस पर बालक को पुरस्कार देकर सम्मानित किया।



<u>माँ</u>

प्यारी जग से न्यारी माँ, खुशियाँ देती सारी माँ। चलना हमें सिखाती माँ, मंजिल हमें दिखाती माँ।

सबसे मीठा बोल है माँ, दुनिया से अनमोल है माँ। खाना हमें खिलाती माँ, लोरी गाकर सुलाती माँ।

दुख में हमें सहारा देती, हर आँस् को वो पी जाती। खुद भूखी रह जाती है, पर हमें रोटी खिलाती है।

पैरों की चप्पल बन जाती, धूप में साया बन जाती। हर कोने में ममता बरसाए, हर दुआ में माँ ही आए।

आशीषों की छाया है माँ, ईश्वर की परछाई है माँ। हर जन्म में मिले यही दुआ, फिर से मुझे मिले मेरी माँ।

प्यारी जग से न्यारी माँ, खुशियाँ देती सारी माँ।

? पहेलियाँ

1.

तीन अक्षर का मेरा नाम, सीधा लिखो या उल्टा, एक समान।

तीन पाव वाली तितली,
 नहा-धोकर कढ़ाई से निकली।

3. लाल बकरी ऊपर आई, सफेद नीचे गई, बताओ क्या?

काला घोड़ा, सफेद सवारी, एक उतरा तो दूसरे की बारी।

बिना पंख के उड़ती जाती, कागज़ पर निशान छोड़ जाती।

> 6. सिर है, पैर नहीं, रास्ता बताती मैं कहीं।

> > मानवी चौहान सातवी 'ब'

संभागीय खेलक्द प्रतियोगिता



शिक्षा सप्ताह



मेरे सपनों की उड़ान- बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

जरा उड़ान तो भरने दो बेटी को, वो भी कुछ कर दिखाएगी देश की रक्षा करने बोर्डर पर, बेटी भी हर दुश्मन से टकराएगी कभी डॉक्टर बनकर बेटी, कई लोगों की जान बचाएगी कभी टीचर बनकर बेटी, कई लोगों को शिक्षा जाएगी

कभी बनकर प्रधानमंत्री बेटी, पूरा देश चलाएगी कभी बनकर बेटी एक माँ, एक बेटे को जनम दे जाएगी कई दर्द सहकर बेटी, आपका वंश बढ़ाएगी आँखों में आँसू हो उसकी, फिर भी वो मुस्काएगी

हर माँ की जान है बेटी, हर पिता की गुमान है बेटी राखी की शान है बेटी, हर भाई का अभिमान है बेटी देश का सम्मान है बेटी, दश का सम्मान है बेटी

> सब लोगों को यह बताओं न इतनी बात समझाओं न एक बेटे के लालच में आकर बेटी को पेट में कत्ल करवाओं न ऐसा पाप कमाओं न, ऐसा पाप कमाओं न

> > "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ"

आरोही छठी 'ब'

नंदा देवी राजजात" (चमोली-उत्तराखंड)

माँ नंदा को उनके ससुराल भेजने की यात्रा है राजजात. माँ नंदा को भगवान शिव की पत्नी माना जाता है तथा कैलाश को उनका ससुराला ऐसी मान्यता है कि एक बार माँ नंदा अपने मायके आई थी तथा किसी कारणवश 12 वर्षों तक ससुराल नहीं जा सकी, 12 वर्ष बाद जब उन्हें मायके भेजा गया तो उनका बड़ा सत्कार और सम्मान हुआ।

चमोली जिले में पट्टी चांदपुर और श्रीगुरु क्षेत्र को माँ नंदा का मायका और बधाण क्षेत्र को उनका ससुराल मन जाता है। एशिया की सबसे लंबी पदयात्रा और गढ़वाल-कुमोऊ की सास्कृतिक विरासत श्रीनंदा राजजात अपने में

कई रहस्य और रोमांच को संजोधन

तीन सप्ताह तक चलने वाली नंदा देवी राजजात उत्तराखंड, आरत का एक तीर्थस्थल त्यौहार है। राज-जात चमोली गढ़वाल जिले में महाई जाती है, और पारंपरिक रूप से गढ़वाल और कुमाङ के देवी-देवता इसमें अज्ञ लेने है। जिसमें कुमाड की अवगाज की नंदा को आमंत्रित किया जाता है तथा गढ़वाल क्षेत्र के सभी देवता शामिल हात

नाम के होता में होता अपने मायक से ससुराल जाता है। अधिकाधिक तौर पर परंपराओं के अनुसार देवी हर बंतह नाल बाद अपने मायक द्वारों और फिर कई इसकों के अध्यान बाद कैलाश लॉट जाती है। स्थानीय गढ़वाजी रीतों-रिवाजी के कथाना, उनके जाने से पहले हर कोई अपने मिलने जाता हैं और देर लंगे उपहार मेंट किए जाते के देही की पात्रा के बनके जासकात के लंह के लंग भी उनके मिलने आते हैं। जे नेवल लीव बालन होता भी म बहु से मिट नरते हैं। देनी जातियों कोंट में जाती है। इसका अध्यय मदिर उनके धर्म मोई दो समिति है। किसी

पहला *हैत* (मात्यह) और दूसरा *सौरास* (ससुराल)। मैत के लोग यात्रा के दौरान बहुत आवुक हो जाते हैं। ऐसी मान्यता है कि जब भी माँ अपने सौरास को जाती तो वे रोती है जिसके कारण आसपास के क्षेत्रों में वर्षा होती है।

पात्रा 290 किलोमीका की होती है। यात्रा की शुरुआत नंदेंप्रयाग से २७ की.मी. दूर कुरूड़ से होती में लगा कार्यकार में 10 की.मी. दूर नौटी गाँव की ओर बढ़ती है। कंसुआ गाँव के कुंवर और नौटी गाँव के नौटियाल रखें के स्वताहर कार्यकार के बाव से होते हुए देवी अपने आई लाटू के निवास स्थान से होते हुए कार्युंड पहुंचनी है। क प्रवासन सीट जिस्से करें से असेक सक्त्यताएं है।

यात्रा में तय किए जाने वाले क्षेत्र-

<u>पहला पडाव</u>: ईड़ाबधाणी

नौटी से यात्रा के शुरू होते ही श्रद्धा के साथ हाल हमाऊ की थप पर माँ का स्वागत इंडाबंधाणी में होता है। दूसरा पडाव: नौटी

ईड़ाबधाणी के अगल दिन राजजात रिवोली, जांख दियारकोट, कुकड़ी, कनोठ, झुरकड़े और नैणी गाँव से भ्रमण कर रात्रि विश्राम के लिए लेटी पहचती है।

तीसराः कासूवा

यहाँ उनकी भेट भराड़ी देवी और कैलापीर देवता से होता है।

चौथा. सेम

चांदपुर गढ़ी से विशेष आकर्षण पाकर महादेव घाट मंदिर होते हुए देवी सेम पहुँचती है।

इसी प्रकार आगे उन्नीस पड़ाव पर कर देवी कैलाश पहुँचती है।

जिसमे पांचवा कोटि, छठा भगोती (नंदा की बहन का निवास), सातवा कुलसारी जहाँ से ससुराल की शुरुवात होती है, आठवा चेपद्यु, नवा- नंद्केसरी, दसवां श्रल्दियागांव, ग्यारवाँ- मुन्दोली, बारहवां- वर्ण, तेरहवां- गैरोलिपाताल, चौदहवां- बैदनी (जहाँ देवी कलि ने रक्तबीज राक्षस का वध कर स्नान किया था), पन्द्रहवां- पतारंचौदियाँ, सोलहवां- शीला समुद्र, सत्रहवां- चनड़ियाघाट,

चौसिंगा खाडू

चौसिंगा खाडू श्रीनंदा राजजात की अगुवाई करता है। मनौती का बाद पैदा हुए चौसिंगा (चार सिंह वाला कला भेड़) खाडू को यात्रा में शामिल किया जाता है।

खाडू पूरी यात्रा की अगुवाई करता है तथा अंत में इसे भेट चढ़ाकर कैलाश में होमकुंड में विदा कर दिया जाता है।



मेरी छोटी बहन'

चाँद खिलौना सी मेरी गुड़िया तितली के परो सी मेरी गुड़िया जेयल के कूक जैसी सुरीली आम फल जैसी रसीली बातें करती बात - बात पर वो इतराती कुछ बोलो तो वो आँख दिखाती छोटी सी प्यारी सी नन्ही सी गुड़िया

घर आँगन में फूलों-सी महकती, हँसी की फुलझड़ी बन के चमकती। नटखट सी बातें, प्यारी शरारतें, हर पल भर देती है नई मुस्कानें।

प्यारी कहानियाँ वो सुनाती, खवाबों की दुनिया में ले जाती। नन्हें हाथों से सपने सजाती, खुशियों की बगिया वो महकाती।

मेरे जीवन की वो रौनक है, प्यारी बहना मेरी चमक है। छोटी सी, प्यारी सी, नन्ही सी गुड़िया, सपनों जैसी मेरी प्यारी गुड़िया।

अभिभावक-शिक्षक बैठक







BOOK FAIR





CALLIGRAPHY

impact of social media on children' Heed 5-16 having their own personal mobile phone. These statics show a massive number of children from a young age being exposed to and having access to different forms of social media on a vast range of devices. This causes a plethora of young children to be wherable and easy targets of ayborbollying, predators, hackers, and many more malicious acts online. Therefore, given the overwhelming evidence that social media has negative effects on children, in my opinion, young children should not use social Young children use social media con a day-to-day hasis. This has a sisk of kiels being exposed to unswitwhile comments conline. This can brainwash kids into thinking these disgusting remarks are normal and whay to say from an exceptionally youthful age. A recent study of 12 to 15 year olds showed that I'm 3 of them had encountered sexist, racist or other discriminatory statements inline, while unother study of 11 to 16 years old showed that 56% of them had seen explicit material online. Seeing there types of inappropriate content from un incredibly young age may influence their still-developing minds into thinking this is whay. In turn, this may rawse them to repeat some of these racist, sexist, and discriminatury werds un real life or contine.

MEDITATION

Since my childhood I always had firm desire to know much and more about meditation and in the past few years I have been gradually understanding more and more about it.

Meditation is a practice that involves focusing your mind to achieve a state of clam and an expense. It is the way of exploring the despest part of ourselves and seeking cameout in it.

The physical and musade world is always full of pressure, chaos and negative emotions. As a smult, must of no thail is difficult to cope up and grow. But it is meditation through which we get a great chance to heal ourselves and put ourselves in pure shence and screnity.

I think that a person having all the necessities, resources and a good image in the society is not as happy as a person who seeks peace in mind and soul.

Although I do not meditate daily but will I am interested in learning more and name about it. One of the techniques of meditation that I got to know through one of my scluttys a practicing meditations on a daily basis is 'Vipassana'

In Pali, an ancient language of Buuchian, the word "In Pali, an ancient language of Buuchian, the word "In Pali, an ancient language of Buuchian, the word "In Pali, an ancient language of Buuchian, the word "In Pali, an ancient language of Buuchian, the word "In Pali, an ancient language of Buuchian, the word "In Pali, an ancient language of Buuchian, the word "In Pali, an ancient language of Buuchian, the word "In Pali, an ancient language of Buuchian, the word "In Pali, an ancient language of Buuchian, the word "In Pali, and ancient language of Buuchian, the word "In Pali, and ancient language of Buuchian, the word "In Pali, and ancient language of Buuchian, the word "In Pali, and ancient language of Buuchian, the word "In Pali, and ancient language of Buuchian, the word "In Pali, and ancient language of Buuchian, the word "In Pali, and ancient language of Buuchian, the word "In Pali, and ancient language of Buuchian, ancient language of Buuc

Vipassana meditation is a form of mindfulness meditation that comes from the original reachings of the Buddha. The practice of Vipassana is a journey of self-discovery and presents an opportunity to experience for oneses the multis of ancient teachings.

There are coming an director common in Dehradum also where Vapassana meditation is taught. This traditions is often taught informatay residential courses during which participants learn the basics of the method and practice sufficiently to experience its beneficial results.

IMPACT OF SOCIAL MEDIA ON CHILDREN

Aged 5-16 having their own personal mobile phone. These statics show a massive number of children from a young age being exposed to and having access to different forms of social media on a vast range of devices. This causes a plethora of young children to be vulnerable and easy targets of cyberbullying, predators, hackers, and many more malicious acts online. Therefore, given the overwhelming evidence that social media has negative effects on children, in my opinion, young children should not use social media.

Young children use social media on a day-to-day basis. This has a risk being exposed to unsuitable comments online. This can 'brainwash' kids into thinking these disgusting remarks are normal and okay to say from an exceptionally youthful age. A recent study of 12 to 15 years olds showed that 1 in 3 of them had encountered sexist, racist or other discriminatory statements online, while another study of 11 to 16 years old showed that 56% of them had seen explicit material online. Seeing these types of inappropriate content from an incredibly young age may influence their still-developing minds into thinking this is okay. In turn, this may cause them to repeat some of these racist, sexist, and discriminatory words in real life or online.

Nimisha Rawat

8th B

INDEPENDENCE DAY



IN THE DARK EERIE NIGHTS...

In the darkest of nights...

People lamented, wailed and were tired, Listening the gunshots being fired, In and around the Taj The city being sabotaged!

Lives lying, the roads blood stained But the mercy of God rained Our brave soldiers filled with courage and valour Became our saviour.

From the atmosphere echoing with horrifying screams
A saviour, a hero stood tall giving fight;
To inclusion, at City of Dreams
Truly a beacon of hope in the darkest of nights!

With valour and strength, he faced every test In the line of duty gave all his best For lives unprotected, he risked his own breath A soldier, a leader fighting till death!

His last words still echo in our ears, Bringing all of us in tears Not only for his martyr, but for the selfless sacrifice He whispered- "Don't come up, I'll handle them alone" The words remain but he's gone!

From heights of the battlefield, his legacy files, A symbol of courage, where true valour lies. In every heart beating, his story will stay, Inspiring all to find courage each day.

So here's to the hero, whose script we hold,
A tale of his gallantry, forever retold.
In our thoughts and actions, his values we'll keep,
For Major Sandeep Unnikrishnan, our respect runs deep!

A TRIBUTE TO "MAJOR SANDEEP UNNIKRISHNAN"- HONOURED WITH THE ASHOK CHAKRA, WHO MARTYRED ON 28 NOVEMBER 2008, SAVING THE LIVES OF MANY PEOPLE DURING THE 26/11 ATTACKS!!

(Source: A Self Composed Poem)

NEEM TREE

Importance of Neem Tree

Neem is large evergreen tree. It is one of the fast-growing trees in the world. The tree can become very tall. Neem has small white flower. It has small fruits. The neem leaves are bitter but has more benefits. It is a medicinal tree.

Importance of Neem Bark

Neem bark is important because it has many uses including:

Toothpaste and mouthwash- Neem is a main component in some toothpaste and mouthwashes.

Soaps and creams- Necm is used in soaps or creams for skin allergies and infections.

Shampoo- Neem is used in shampoos to treat dandruff.

Importance of Neem Leaves

Neem leaves is important because it has many uses including:

Pesticides- Neem oil is used as a pesticide to control insects, mites and fungi. Neem oil is low in toxicity for mammals and is commonly used in organic farming.

Blood Sugar- Neem leaves have been used as a traditional treatment for diabetes, and there is some evidence that it may help control blood sugar level.

Aarohi



ANNUAL PANEL INSPECTION





FREEDOOM FIGHTERS

Freedom Fighters were those brave and great people who sacrificed their lives to achieve freedom for their country. They played an important role in India's struggle for independence. The faced imprisonment, exploitation, immense torture and sometimes even death to secure their country's freedom. Because of their great sacrifices, we are living in an independent and democratic country today.

Mahatma Gandhi- Mahatam Gandhi also known as Bapu was the great leader of the freedom movement. He was a great follower of non walence. He inspired millions of people to join the freedom movement through peoceful means.

Netaji Subhash Chandra Bose-Netaji Subhash Chandra Bose was an excellent leader. He played a significant role in India's Independence struggle. He founded the Indian National Army to fight against the Buttish. He gave the Indian "Give me blood and I shall give you freedom."

Bhagat singh- Bhagat Singh was an Indian revolutionary and a brave freedom fighter who played an important role in getting freedom from the British rule. He is remembered for his revolutionary ideas and his martyrdom at a very young age.

Ranj Lakshmi Bai- Rani Laxmi Bai was one of the bravest freedom fighters of India. Rani Lakshmi popularly known as Jhansi Ki Rani. She is remembered for her bravery and leadership during the 1857 rebellion against the British forces.

Chandra Shekhar Azad- Chandra Shekhar Azad was a fearless revolutionary and a great freedom fighter. His sacrifice and courage inspired many young revolutionaries to continue the struggle for independence.

Freedom fighters are the reason that we live in a free country. Because of them we are being able to walk and express ourselves freely. We must honour their sacrifice and aim to live together in harmony and peace.



As the time flew,
My memories grew.
As the time flew,
I stepped out for something new.

As the time flew, cople would change.

l always knew,

As the time flew,

he sky turned dark blue.

As the time flew,

The winter morning become more charming with the dew.

As the time flew, The days left very few.

As the time flew,

I became so old, that is couldn't even chew.

As the time flew, As the time flew.

> Samiya Zaidi V B

PLANET v/s PLASTIC

The struggle between our planet and plastic has become one of the greatest environmental challenges of our time. Once praised as a revolutionary invention, plastic is now polluting oceans, rivers, and land at an alarming rate. Marine life suffers as millions of tons of plastic waste end up in oceans each year, and animals often mistake it for food, leading to injury and death. Plastic's non-biodegradable nature means it can linger for hundreds of years, contaminating ecosystems and entering the human food chain through microplastics. It also contributes to climate change, as plastic production releases harmful greenhouse gases. Furthermore, the chemicals in plastics, like BPA and phthalates, pose serious health risks to humans, causing diseases such as cancer and hormonal disorders. Despite efforts, only a small percentage of plastic is recycled, while the rest accumulates in landfills, oceans, or is burned, adding to air pollution. Governments spend billions annually on cleanup efforts, yet stronger policies banning single-use plastics and encouraging sustainable alternatives are urgently needed. Individuals must also act by refusing single-use plastics, adopting eco-friendly products, and spreading awareness. Companies too must take responsibility for the waste they produce. If we do not act now, we risk losing the natural beauty of our planet and jeopardizing the health of future generations.

RIDDLES

1. What occurs once in a minute, twice in a moment, and never in 1,000 years?

Answer: The letter "M"

2. What kind of band never plays music?

Answer: A rubber band

3. What is always in front of you but can't be seen

Answer: The future

4. The more of this there is, the less you see. What is it?

Answer: Darkness

5. I am an odd number. Take away one letter and I become even.

What number am I?

Answer: Seven

6. What has hands but can't clap?

Answer: A clock

7. What has a neck but no head?

Answer: A bottle

8. What gets wetter the more it dries

Answer: A towel

9. I speak without a mouth and hear without ears. I have no body, but I come alive with the wind. What am I?

Answer: An echo

10. What can you break, even if you never pick it up or touch it?

Answer: A promise



In our Vidyalaya, there is a beautiful tradition where students gift a plant to their class teacher on their birthday. This small gesture teaches the value of nature and respect for teachers. It spreads joy, strengthens the bond between students and teachers, and encourages everyone to care for the environment. Such meaningful practices make school life special and full of learning.

WHISPERS OF DIWALI

In the heart of the night, where the candles gleam Hope dances softly, like a gentle dream.

Rangoli blooms with colors so bright, Each petal of joy, a spark in the light.

Families gather, Laughter fills the air, Sweets shared with love, a bond we all share, But in this joy, let's pause and reflect, On the world around us, the lives we affect

Let's light up the skies, but in a mindful With eco-friendly choices we'll brighter the day, Diyas that flickers, without smoke our sound, A festival of peace, where a true joy is found.

(Source: A Self Composed Poem)

Sana Parveen XI A

हिन्दी पखवाड़ा





संस्कृतभाषायाः गौरवम्

संस्कृतं अमृतं वाणी,

भारते गाँउवं महत्। वेदशास्त्रपुराणानाम्, मूलं संस्कृतं सदा॥

गंगा इव पवित्रा सा, जानधारा प्रवाहिनी। श्लोकैः काव्यैः च गीतैः, विकसति जगति शुभम्॥

लिता मधुरा च सा, सर्वेषां मनमोदिनी। सर्वज्ञानस्य आधारः, संस्कृतं सततं वद॥

संस्कृतं रक्ष्यते यस्य, संस्कृतेः रक्षणं कुरु। भवतु सदा विजयिनः, संस्कृतं जीवयाम वयम्॥



काविदासः

कालिदासः संस्कृतभाषायाः विश्वप्रसिद्धः कविः नाटककारश्च आसीत्। सः प्राचीनकालस्य चतुर्थी-पञ्चमी शताब्द्यां भारतदेशे जन्म प्राप्तवान्। तस्य जीवनवृत्तान्तः स्पष्टं न लभ्यते, किन्तु सः उज्जयिन्यां निवसति स्म इति प्रसिद्धम्। कालिदासः प्रकृतिप्रियः आसीत्, तस्य काव्येषु प्रकृतेः सौन्दर्यं, ऋतूनां वर्णनं, मानवीयभावनाः च अत्यन्तं मनोहरू पण प्रकाशिताः सन्ति। तेन "अभिज्ञानशाकुन्तलम्" इति नाटकं रचितम्, यत् संस्कृतसाहित्ये सर्वश्रेष्ठं नाटकं मन्यते।

एवमेव तेन "मेघदूतम्" नाम्नि महाकाव्यं लिखितम्, यस्मिन् विरहिणः यक्षस्य दुःखपूर्णकथा वर्णिता अस्ति। "रघुवंशम्" च "कुमारसंभवम्" नाम्नी द्वे महाकाव्ये अपि तस्य प्रसिद्धानि काव्यानि सन्ति। कालिदासस्य शैली सरला, मधुरा, भावपूर्णा च अस्ति। तस्य रचनासु सुन्दरशब्दचयनं, अलङ्कारप्रयोगः च अत्यन्तं रमणीयम् दृश्यते।

कालिदासः संस्कृतसाहित्यस्य उज्ज्वलतमः नक्षत्रः मन्यते। तस्य कृतेः प्रभावः केवलं भारतदेशे न दृश्यते, अपि तु सम्पूर्णे विश्वे अपि तस्य यशः प्रसारितम्। अद्यापि विद्यालयेषु विश्वविद्यालयेषु च तस्य काव्यानि श्रद्धया पठ्यन्ते। अतः कालिदासः संस्कृतभाषायाः गौरववर्धकः काव्यपुरुषः इति कथ्यते।

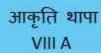
नियति

VII B

कुम्भः 2025

आरते धार्मिकजीवने कुम्अमेला अतीव विशिष्टं स्थानं धारयति। अयं पर्वः प्रत्येकद्वादशवर्षे एकस्मिन स्थले आयोज्यते, तथा च प्रत्येकषण्ठवर्षे अर्धकुम्अमेला अपि आयोज्यते। 2025 तमे वर्षे महान् कुम्अमेला प्रयागराजे अविष्यति, यत्र गङ्गायाः यमुनायाः सरस्वत्याः च त्रिवेणीसङ्गमे सहस्रशः श्रद्धालवः पुण्यस्नानार्थं समागमिष्यन्ति। एषः पर्वः कवलं स्नानमात्रस्य न अवसरः, अपितु धार्मिकचेतनायाः, संस्कृतिकसमृद्धेः च सजीवदर्शना अस्ति। साधवः, महात्मानः, नागासाधवः च दूरद्रात् आगत्य तत्र वासं कुर्वन्ति, उपदेशान् ददति च। कुम्अमेलस्य समये यज्ञाः, हहनानि, कथ्यमृतप्रवचनानि, गीर्तनानि च नित्यं आयोज्यन्ते।

कुम्भमेलायाः आध्यात्मिकमहत्त्वं अतीव विशालम् अस्ति। मन्यन्ते यत् अस्मिन्नेव पुण्यकाले गङ्गास्नानं कृत्वा मनुष्यः असस्तपापेभ्यः विमुक्तः भवति, मोक्षलाभः च सुलभः भवति। 2025 तमे वर्षे संस्कारः अपि सम्पूर्णव्यवस्थां सम्यक् करिष्यति, यत् यात्रिकाः निर्भयम्, सुरक्षितम् च मेलम् अनुभवेयुः। चिकित्सा-सेवा, भोजन-व्यवस्था, यातायात-सुविधाः च सर्वत्र सुलभाः भविष्यन्ति। अयं कुम्भमेला भारतस्य सांस्कृतिकवैभवस्य, धार्मिकपरम्परायाः च जीवितदर्शना अस्ति। एषः महापर्वः सर्वान् मानवाः एकत्वेन, प्रेम्णा च संयोजयति। वयं सर्वे अपि श्रद्धया, भक्त्या च एतस्मिन् पवित्रे महोत्सवे भागं स्वीकृतवन्तः भविष्याम।



शिक्षक दिवस



केंद्रीय विद्यालय क्षेत्रीय कार्यालय देहरादून द्वारा अयोजित कार्यशाला

इस कार्यशाला में ऑरबिंदो सोसाइटी के मार्गदर्शन में शिक्षकों को दक्षता-आधारित प्रश्न निर्माण पर प्रशिक्षण दिया गया।



कृत्रिमबुद्धिः

आधुनिके युगे विज्ञानस्य विकासः अतिवेगेन जातः। विक्रानस्य कृपया अस्माकं जीवनं सहजं सुखदं च जातम्। एतस्मिन्नेव विकासे कृत्रिमबुद्धि नाम एकः अद्भुतः आविष्कारः अभवत्। कृत्रिमबुद्धिः तु तादृशी बुद्धिः या मनुष्येभ्यः यन्त्रेषु स्वापितं भवति, यया यन्त्राणि अपि विन्तयितुं, निर्णयं कर्तुं, समस्याः समाधातुं च शक्नुविन्ति

कृतिमबुद्धिः विविधेषु क्षेत्रेषु उपयोगायते – विवर्धः जिल्लाम् उद्योगेषु, वात्रायाम् च। उदाहरणरूपेण, चिकित्सायाम् रोगपरिचयः शीघं अवस्। जिल्लाम् अपि कात्रेभ्यः विशेषसहायता कृतिमबुद्ध्या दत्तुम् शक्यते। यानयात्रायाम् स्वयवाधित्तवात्रानि आवे व्यविभवुद्ध्याः उपकारेण संचरन्ति।

यद्यपि कृत्रिमबुद्धिः मानवजीवनं सुगमं क्राहि, स्थापि तस्य अपस्य सावधानी अपेक्षिता। यदि मानवः अत्यधिकं यन्त्रेषु अवलम्बते, त्रि स्वयंदेश बन्दं भवति। अतः युक्तम् विवेकपूर्णं च कृत्रिमबुद्धेः उपयोगः करणीयः।

कृत्रिमबुद्धिः अस्माकं भविष्यम् उज्ज्वलं कोति। बदि वयं तस्य उपयुक्तं उपयोगं कुर्मः तर्हि सः मानवसमाजस्य उन्नतिं सुनिश्चित् समर्थः भविष्यति। विज्ञानस्य अनुग्रहेण, विवेकस्य साहाय्येन च, वयं उज्ज्ञवलं भविष्यं उचयितुं शक्नुमः।

अमित

IXA

बाल दिवस



बाल मेला



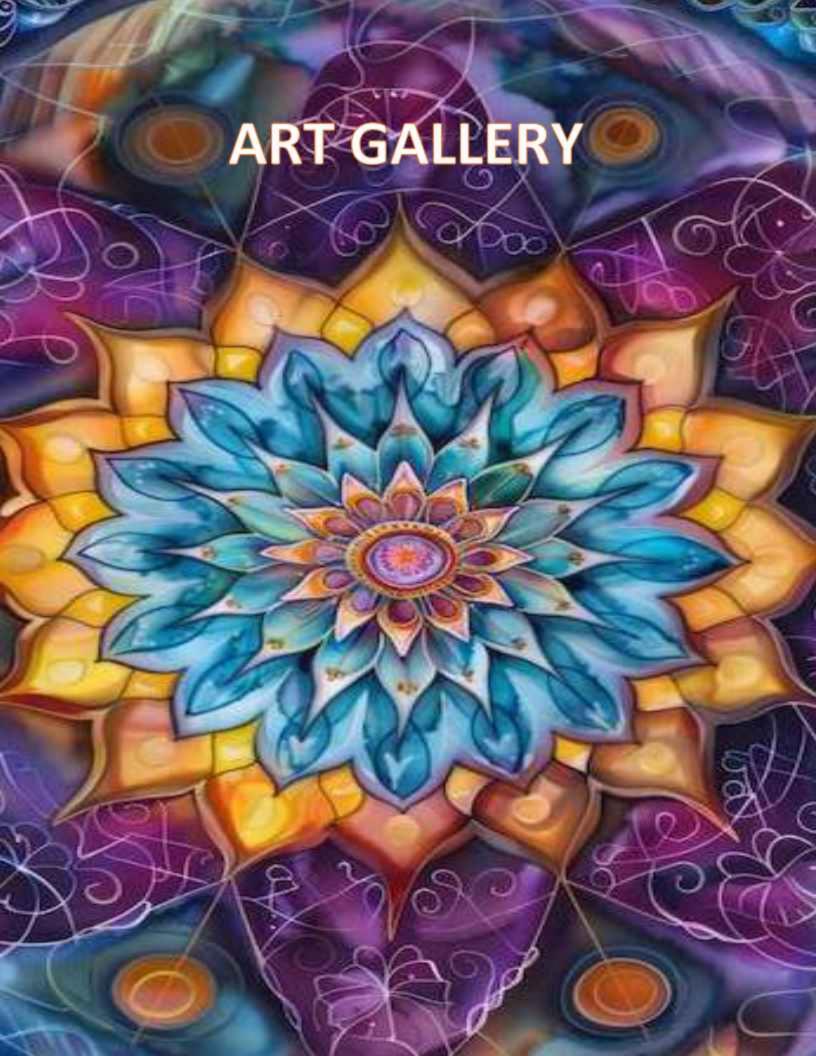


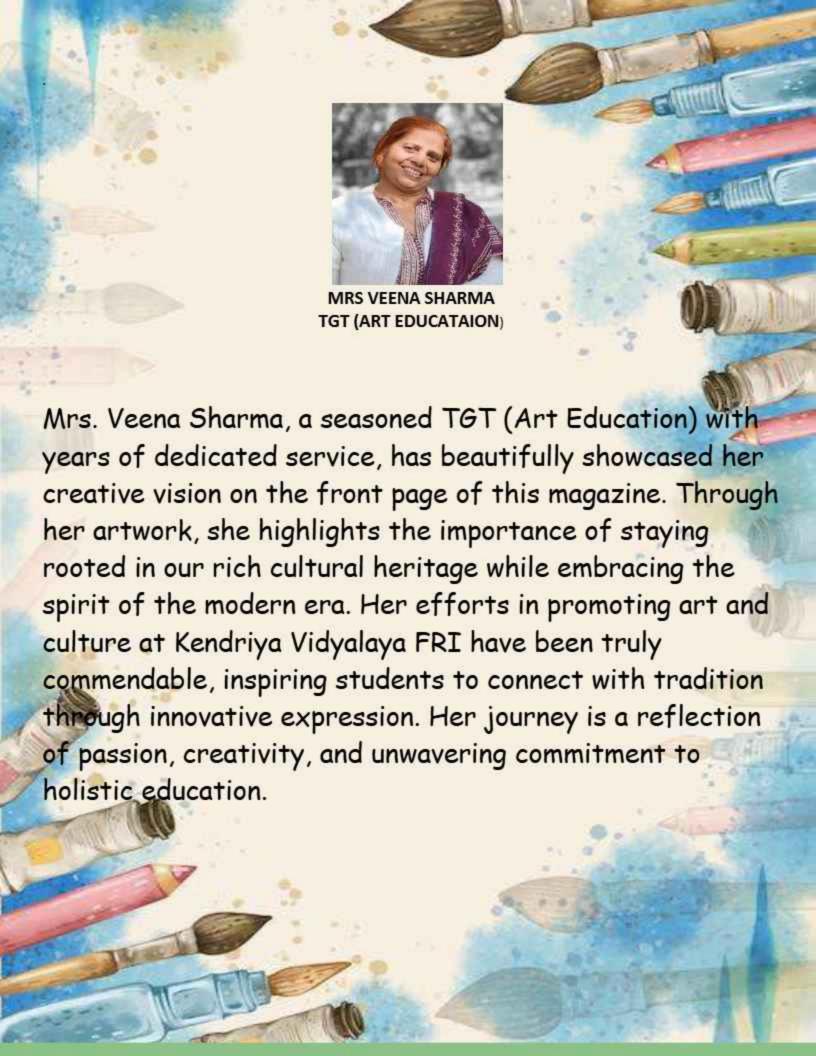
GRANDPARENT'S DAY



REPUBLIC DAY









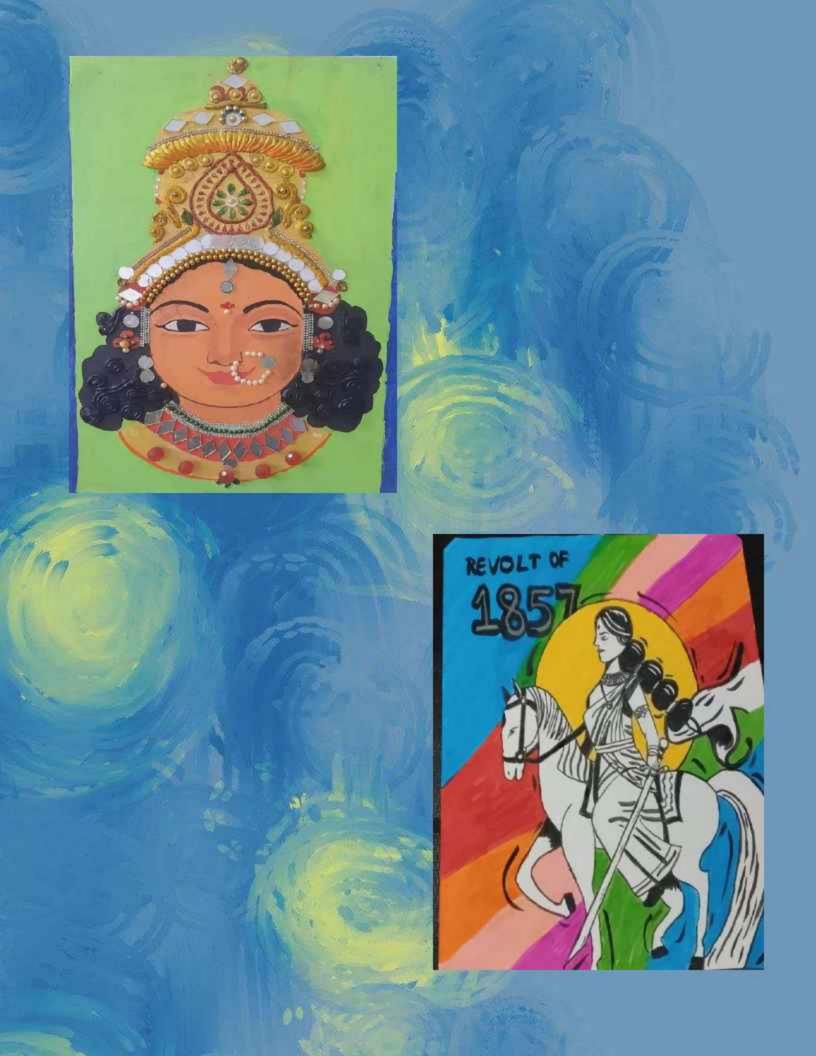
VANDITA SHARMA CLASS: VIII -A

The beautiful back cover of this magazine has been designed by Vandana Sharma of Class 8 A, who has wonderfully captured the spirit and grandeur of the Mahakumbh through her artwork. Her creation reflects the deep cultural and spiritual essence of this grand event, showcasing her keen eye for detail and her connection to India's rich traditions. Vandana has always been passionate about art, showing remarkable dedication and creativity from a young age. With a special interest in hyperrealism, she aspires to refine her skills further and pursue a professional career in the world of fine arts. Her journey is a true inspiration for all budding artists of the school.











VASANT PANCHAMI











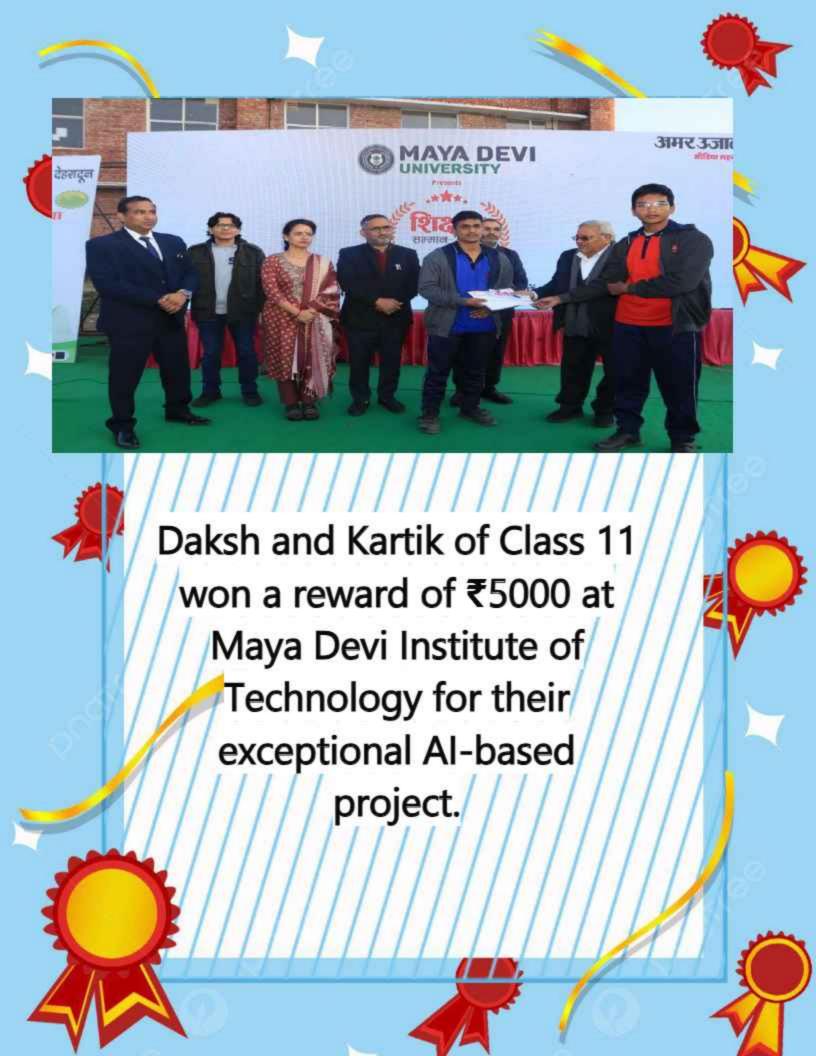
Mrs Tara Joshi (PGT Hindi) & Mr Sandeep Kandwal (PGT Physics) were awarded the "GURU GAURAV SAMAAN" for their selfless contribution towards Education by Shivalik Group of Colleges, Dehradun







Ishaan Negi (Class XII B)
& Kartik Semwal(XB) of
our Vidyalaya got
selected to represent
the Vidyalaya at
National Children
Science Congress held
at KV No. 1, AES, Agra.







DHRISHTI THAPA



ASHNA



DIVYANSH

52 KVS NATIONAL SPORTS MEET

Gold Medalists U-17 Football (Boys)



ANSH THAPA



SHIVAM NEGI



KARAN NEGI



LAKSHYA THAPA

SGFI PARTICIPATIO U-17 FOOTBALL FROM KV FRI, D.DUN

11111111111



ANSH THAPA



DIVYANSHI



SHRISHTI TOMAR









